17 अप्रैल 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

धर्मानुराग धर्म का प्रकार नहीं, राग का प्रकार है; अत: वह धर्म नहीं, राग ही है; धर्म तो एक वीतरागभाव ही है।

ह्न गागर में सागर, पृष्ठ-90

वर्ष : 33, अंक : 2 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती में उमड़ा जन सैलाब

छिंदवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ नगर के प्रमुख बाजार गोलगंज स्थित अहिंसा स्थली में श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल छिन्दवाड़ा द्वारा दिनाँक 5 व 6 अप्रैल को अपार जनसमूह के बीच अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। दो दिवसीय प्रवास में डॉ. भारिल्ल के चार प्रवचन हुये, जिन्हें हजारों की संख्या में जैन-अजैन समाज ने उत्साह एवं अत्यंत रुचिपूर्वक सुना।

दिनांक 6 अप्रैल को डॉ. भारिल्ल के प्रवचन एवं हीरक जयन्ती समारोह की विशाल सभा में डॉ. भारिल्ल के णमोकार महामंत्र पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त आयोजित हीरक जयन्ती समारोह की अध्यक्षता श्री निकुंज श्रीवास्तव (जिला कलेक्टर) ने की।

समारोह का शुभारंभ श्रीमती अनीता कौशल के मंगलाचरण से हुआ। सर्वप्रथम पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली ने डॉ. भारिल्ल का परिचय दिया। तत्पश्चात् छिंदवाड़ा जैन समाज की ओर से प्रशस्ति-पत्र, शॉल एवं श्रीफल देकर पगड़ी पहनाई गई। प्रशस्ति-पत्र का वांचन पण्डित ऋषभजी शास्त्री ने किया। इस अवसर पर आपको **'जैनधर्म के गौरव'** उपाधि से सम्मानित किया गया।

मुमुक्षु मण्डल छिंदवाड़ा के अतिरिक्त सिंगोड़ी से पण्डित देवेन्द्रकुमारजी, उभेगाँव से श्री शेषकुमारजी, कच्छीबीसा जैन समाज से श्री प्रफुल्लभाई शाह, नागपुर मुमुक्षु मण्डल से डॉ. राकेशजी शास्त्री, प्रेस क्लब छिंदवाड़ा की ओर से श्री रत्नेशजी जैन आदि ने भी डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

श्रीमती गुणमालाजी भारिल्ल का स्वागत श्रीमती कुसुमलता पाटनी एवं श्रीमती सुशीला सिंघई ने किया।

कार्यक्रम में श्री रत्नेशजी जैन (अध्यक्ष-प्रेस क्लब, छिंदवाड़ा), डॉ. राकेशजी शास्त्री (विभागाध्यक्ष-दर्शन विभाग मङ्गलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़), पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़, पण्डित अशोकजी शास्त्री नागपुर, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी, श्री अशोकजी वैभव, श्री शांतिकुमारजी पाटनी आदि की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

कार्यक्रम के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि यह सम्मान किसी व्यक्ति विशेष का न होकर जिनवाणी का सम्मान है, जैनदर्शन में वर्णित उन तत्त्वों का सम्मान है, जिनके माध्यम से नर से नारायण बना जा सकता है। विद्वानों का सम्मान वास्तव में उनके द्वारा की गई आगम की सेवा का सम्मान है। अपने उद्बोधन के अन्तर्गत डॉ. भारिल्ल ने भौतिकवादी युग में अध्यात्म की उपादेयता पर भी विस्तृत प्रकाश डाला।

जिला कलेक्टर महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. भारिल्ल की प्रयोगधर्मिता की प्रशंसा करते हुये कहा कि सत्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिये व्यावहारिक दृष्टिकोण आवश्यक है। जब तक प्रयोग के माध्यम से हम अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं करेंगे, स्वयं का चिंतन जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत नहीं करेंगे, तब तक धर्म को जनसामान्य के मध्य सम्प्रेषित नहीं किया जा सकता; ऐसी प्रयोगधर्मिता डॉ. भारिल्ल में देखी जा सकती है।

इस अवसर पर आयोजित सभा का सफल संचालन डॉ. महेशजी जैन (उपसंचालक -लोकशिक्षण म.प्र. शासन भोपाल) ने किया।

दोनों दिन डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पूर्व पण्डित अभयजी शास्त्री खैरागढ़ के ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचन का लाभ मिला।

दिनाँक 5 अप्रैल को डॉ. भारिल्ल के सान्निध्य में ऐतिहासिक पत्रकार वार्ता का भी आयोजन रखा गया। लगभग डेढ से दो घण्टे चली इस प्रेसवार्ता में पत्रकारों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का डॉ. भारिल्ल ने बहुत तार्किक ढंग से समाधान किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मुमुक्षु मण्डल एवं युवा फैडरेशन के सभी सदस्यों का भरपूर सहयोग रहा। आयोजन के माध्यम से डॉ. भारिल्ल के 215 घण्टों के 800 डी.वी.डी. अर्थात् 1 लाख 72 हजार घण्टों के प्रवचन घर-घर पहुँचे। ●

सम्पादकीय – 33

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–४८

विगत गाथा ४७ में दो पृथक्–पृथक् उदाहरण देकर यह बताया है कि धन व ज्ञान पुरुष को धनी व ज्ञानी करते हैं। जिसप्रकार भिन्न अस्तित्व वाले धनपती व ज्ञानी दोनों के भिन्न–भिन्न अस्तित्व हैं, भिन्न–भिन्न संस्थान हैं, भिन्न–भिन्न संख्या हैं, उसीप्रकार अभिन्न अस्तित्व वाले ज्ञान व जीव में एक अस्तित्व, एक संस्थान व एक संख्या आदि हैं, ऐसा जानो।

अब इस गाथा में कहते हैं कि ह्न 'यदि ज्ञानी व ज्ञान सदा परस्पर भिन्न पदार्थ हों तो दोनों अचेतन ठहरेंगे।'

मूलगाथा इस प्रकार है ह्न

णाणी णाणं च सदा अत्थंतरिदा दु अण्णमण्णस्स।
दोण्हं अचेदणत्तं पसजदि सम्मं जिणावमदमं ।।४८।।

(हरिगीत)

यदि होय अर्थान्तरपना, अन्योन्य ज्ञानी–ज्ञान में।
दोनों अचेतनता लहें, संभव नहीं अत एव यह ।।48।।

उपर्युक्त गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न यदि ज्ञानी आत्मा और ज्ञान सदैव परस्पर अर्थान्तरभूत (भिन्न पदार्थभूत) हों तो दोनों को अर्थात् आत्मा और ज्ञान–दोनों को अचेतनपने का प्रसंग प्राप्त होगा; क्योंकि ज्ञान बिना ज्ञानी कैसा ? तथा ज्ञानी के बिना ज्ञान किसके आश्रय रहेगा ?

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्रदेव इसी का स्पष्टीकरण करते हुए कहते हैं कि ह्न 'द्रव्य और गुणों में यदि अर्थान्तरपना अर्थात् भिन्नता हो तो आत्मद्रव्य अपने करण–अंश के बिना कुल्हाड़ी रहित देवदत्त की भाँति अपने साधन रूप ज्ञान का अभाव होने से जान ही नहीं सकेगा। इस कारण आत्मा को अचेतनपना ठहरेगा।

यदि कोई कहे कि ह्न जिसप्रकार लकड़ी और मनुष्य पृथक् होने पर भी लकड़ी के संयोग से मनुष्य लकड़ी वाला कहा जाता है, वैसे ही ज्ञान व आत्मा पृथक् रहकर भी आत्मा को ज्ञान वाला कह देंगे।

सो यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि लकड़ी और मनुष्य की भाँति ज्ञान आत्मा से पृथक् नहीं है। आश्रय के बिना गुण टिकेगा कहाँ ? निर्विषेण द्रव्य और निराश्रय गुण का जगत में अस्तित्व ही नहीं है।

इसी बात को आचार्य जयसेन ने अग्नि व ऊष्णता के उदाहरण से स्पष्ट किया है। वे कहते हैं ह्न जैसे ऊष्णता को अग्नि से पृथक् करने पर अग्नि शीतल हो जायेगी, उसी तरह आत्मा से ज्ञान को जुदा करने पर दोनों अचेतन (जड़) हो जायेंगे; अतः ज्ञान आत्मा से भिन्न नहीं है। यह कहकर आचार्य जयसेन ने आ. अमृतचन्द्र के कथन को ही पुष्ट किया है।

कविवर हीरानन्दजी अपनी काव्य शैली में कहते हैं कि ह्न

(दोहा)

ग्यानी ग्यान विषै सदा, अर्थान्तर जो होइ।
दुहू अचेतनता लहै, सम्यक् जिनमत सोई ।।२५१ ।।

(सवैया इकतीसा)

ग्यानी कौ ज्ञान तैं जुदा जौ पै कहै कोई नर,
तौ पै करनाच्छ बिना कैसे जीव चेतै है।
ग्यानी बिना ज्ञान तौ पै कारण कर्तृत्व बिना,
चेतक बिना ही ज्ञान मूढ़ भाव लसै है।।
ग्यानी ग्यान जुदै मिले, चेतना सुभाव तौपै,
द्रव्य कौन गुण कहाँ अस्तिरूप रैतै है।
तातैं ग्यान ग्यानी भेदता अभेद विषै,
स्याद्वाद साधि सकै तो पै मोछि कैते है।।२५२।।

(चौपाई)

जैसे करवत धारी कोई काढ़ चीरना कारज सोई।
जो कहुँ करवत हाथ न आवै तो काहे करि काठ छिदावे ।।२५३।।
अर जो करवत होय अकेला काठ चीरना प्रगट दुहैला।
चीरनहारे बिन कौ चीरे करवत काठ जदपि है नीरै।।२५४।।
तातैं छिंदत क्रिया सम्पूरण करवत पुरुष दोउ जब पूरन।
तैसे ग्यानी ग्यान जुदाई ग्येय जानता बनै न भाई।।२५५।।
एकमेक जो कहिए दौनों तो है ग्यप्ति क्रिया का हौनौ।
तातै अविनाभावी कहिए स्याद्वाद जिनवाणी लहिए।।२५६।।

(दोहा)

इह सब कथन मंथन करत, चलै जात मुनिराज।
सकल अरथ जातै सफल स्याद्वाद सौं काज।।२५७।।

उक्त पद्यों में कवि ने जो कहा उसका भाव यह है ह्न ज्ञानी व ज्ञान भिन्न नहीं हैं। गुण–गुणी में लक्षण भेद होने पर भी वस्तु एक है, अभेद है। जैसे ह्न करौंतधारी कोई पुरुष काठ चीरना चाहे; पर काठ न हो तो किसे चीरे ? तथा काठ हो और करौंत न हो तो किससे चीरे ? दोनों हों और चीरने वाला व्यक्ति न हो तो काठ व करौंत होते हुए कौन चीरे ? इसलिए काठ की छेदन क्रिया तभी संभव है जब करौंत व पुरुष दोनों हों।

इसीप्रकार ज्ञानी व ज्ञान जुदे होने पर ज्ञेय का जानना नहीं हो सकता। जब दोनों एकमेक हों तभी ज्ञप्ति क्रिया बन सकेगी। इसप्रकार कवि ने भी दोनों क्रियाओं को अविनाभावी कहा है। इसप्रकार स्याद्वाद से ही वस्तुरूप की सिद्धि है।

अब इस बात के स्पष्टीकरण में गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ह्न आत्मा और चैतन्यगुण का सदा सर्वथा भेद हो तो ज्ञान व ज्ञानी दोनों जड़ हो जायेंगे।

आत्मा और उसका ज्ञान गुण व पर्याय भिन्न हो तो जानन क्रिया नहीं हो सकेगी। ज्ञान की पर्याय पर से या इन्द्रियों से होने का प्रसंग प्राप्त होगा। ऐसी स्थिति में पर्याय ही नहीं रहेगी तथा पर्याय का अभाव होने पर पर्यायवान भी नहीं रहेगा।

धर्म की पर्याय 'पर' के कारण मानने पर धर्म का आधार 'पर' होने से धर्म नहीं रहता तथा धर्म का अभाव होने पर धर्मीह्नआत्मा ही नहीं रहता।

ज्ञान, दर्शन, श्रद्धा, वीर्य आदि पर्यायें द्रव्य के आधार से होती हैं ह्न ऐसा न माने तो समय-समय की पर्यायें द्रव्य के साथ एकता नहीं पा सकतीं। पर से पर्याय होना माने तो पर्याय द्रव्य के बिना ठहरे; परन्तु ऐसा होना संभव नहीं है, क्योंकि द्रव्य पर्याय बिना रहता ही नहीं है।

जो ऐसा मानते हैं कि क्षायिक सम्यग्दर्शन आत्मा के अवलम्बन से नहीं; बल्कि तीर्थंकर के पादमूल के कारण होता है; परन्तु ऐसा मानने वालों की मान्यता में अपनी पर्याय अपने द्रव्य के आधार से न रहकर परद्रव्य के आधार से ठहरी; क्योंकि पर्याय आधार के बिना तो रहती नहीं और पर के आधार से होती नहीं। इसकारण पर के कारण से होना मानना असत् कल्पना है। इसी प्रकार जो ऐसा मानता है कि ह्न तीर्थंकर के चरणों में तीर्थंकर प्रकृति बँधती है तो इसका अर्थ यह हुआ कि पर्याय द्रव्य के बिना हो गई तथा पर्याय पर से होना मानने पर द्रव्य पर्याय के बिना रहा ह्न इसप्रकार मानने पर तो द्रव्य व पर्याय ह्न दोनों का नाश होने का प्रसंग प्राप्त होगा।

इसप्रकार इस गाथा में यह कहा कि ह्न अग्नि व ऊष्णता की भाँति ज्ञान व ज्ञानी में मात्र गुण गुणी का भेद है, वस्तु भेद नहीं। दोनों में तादात्म्य संबंध है, संयोग आदि अन्य कोई सम्बन्ध नहीं है। ●

सिलवानी में शिविर सम्पन्न

सिलवानी-रायसेन (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 19 से 25 फरवरी तक तारण-तरण दि. जैन समाज द्वारा श्री तारण-तरण दि. जैन चैत्यालय में **'भेद-विज्ञान आत्म जागृति शिविर'** का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा जयपुर द्वारा ग्रंथाधिराज समयसार की 198 से 205 तक की गाथाओं पर सरल सुबोध शैली में प्रवचनों का लाभ मिला।

इसके अतिरिक्त तारण-तरणस्वामी द्वारा रचित श्री पण्डित-पूजा ग्रंथ की 9वीं गाथा पर पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी पंकज छिंदवाड़ा द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही पण्डित धर्मेन्द्रजी अमरवाडी, श्री कस्तूरचंदजी भोपाल, पण्डित समकितजी शास्त्री सिलवानी, पण्डित सचिनजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री एवं पण्डित मोहितजी शास्त्री के प्रवचनों का भी लाभ मिला। **- जयकुमार जैन**

दीक्षान्त समारोह

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 14 मार्च को आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान का दीक्षान्त समारोह पण्डित कोमलचंदजी टड़ा की अध्यक्षता में सादगी एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में कक्षा 9 के छात्रों ने कक्षा 10 के छात्रों को अश्रुपूरित भावभीनी विदाई दी।

प्रवेश हेतु आवेदन भेजें

सिद्धायतन-द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 9 से16 जून तक श्रुतपंचमी के पावन प्रसंग पर ब्र. श्रीचन्द्रजी की पुण्य स्मृति में चतुर्थ बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

इसी शिविर में समन्तभद्र शिक्षण संस्थान की कक्षा 6 में प्रवेश हेतु प्रवेश प्रक्रिया सम्पन्न होगी। आवेदन भेजने की अंतिम तिथि 30 मई, 2010 है। **सम्पर्क -** श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वा. मंदिर ट्रस्ट, सिद्धायतन, द्रोणगिरि, जिला-छतरपुर (म.प्र.) 09425882618, 09754156849

भगवान आदिनाथ जयंती संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ दिनाँक 9 मार्च को श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में भगवान आदिनाथ जयंती महोत्सव बहुत हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर मंगलायतन से पधारे पण्डित अशोकजी एवं पण्डित देवेन्द्रजी के ग्रंथाधिराज समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: सोलहकारण विधान का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गुरुदेवश्री के प्रवचनों की डी.वी.डी. सेट का विमोचन श्री पूनमचंदजी लुहाड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन पण्डित अश्विनजी नानावटी ने किया।

भगवान महावीरस्वामी की जन्म जयंती

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के प्रसंग पर पंच दिवसीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत राष्ट्रीय कवि सम्मेलन, प्रभात फेरी, विद्वत् विचार-गोष्ठी आदि अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। दिनांक 28 मार्च को महावीर जयन्ती के दिन श्री योगेशजी टोडरका के संयोजकत्व में विशाल जुलूस निकला, जो नगर के विविध मार्गों से होता हुआ रामलीला मैदान पहुँचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुआ।

इस अवसर पर श्री **टोडरमल स्मारक भवन जयपुर** में प्रात: पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के करकमलों से ध्वजारोहण हुआ। तदुपरान्त बापूनगर जैन समाज के सभी लोग एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन-महानगर के सदस्य सुन्दर झांकी के साथ श्री टोडरमल स्मारक भवन से रवाना हुये, जो लाल कोठी जैन मंदिर होते हुये पार्श्वनाथ चैत्यालय बापूनगर पहुँचे। बाद में **महानगर फैडरेशन द्वारा तैयार की गई प्रभावक झांकी** जयपुर शहर के मुख्य जुलूस में शामिल हुई।

जयपुर महानगर युवा फैडरेशन के अध्यक्ष श्री संजयजी सेठी एवं महामंत्री डॉ. बी.सी. जैन ने बताया कि बच्चों एवं युवकों में धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण विषय पर केन्द्रित झांकी का आयोजन बहुत सफल रहा। झांकी के संयोजक पं. संजयजी एवं पं. गजेन्द्रजी शास्त्री थे।

इसी दिन सायंकाल **अम्बाबाड़ी दि. जैन मंदिर** में पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा 'भगवान महावीर के जीवन एवं सिद्धान्तों' पर मार्मिक प्रवचन हुआ।

● महिला मण्डल द्वारा कवि सम्मेलन ह्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में महावीर जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिनाँक 27 मार्च को वीतराग-विज्ञान महिला मण्डल की ओर से कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें महिला मण्डल की 10 सदस्याओं ने भगवान महावीर के जन्म से मोक्ष तक की प्रक्रिया पर कविता पाठ किया। कवि सम्मेलन की सम्पूर्ण प्रक्रिया श्रीमती सुशीलाजी जैन (अलवरवालों) के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मीना जैन ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्रीमती पूजा जैन जनता कॉलोनी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमती अचरजदेवी मौजूद थीं। मंगलाचरण श्रीमती प्रीति जैन ने तथा अन्त में आभार प्रदर्शन श्रीमती स्तुति जैन ने किया।

संचालन श्रीमती सुशीलाजी के साथ श्रीमती अनुश्री जैन ने किया।

देवलाली प्रशि
पत्रि

क्षण शिविर की
ेका

उदयपुर में हीरक जयन्ती का ऐतिहासिक कार्यक्रम

उदयपुर नगरी मानो 24 एवं 25 मार्च को डॉ. भारिल्लमय हो गई। डॉ. भारिल्ल के दो प्रवचनों ने उदयपुर वासियों पर जादू कर दिया। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में आपके प्रवचनों की तैयारियाँ अनेक दिनों पहले से ही जोर–शोर से चल रही थीं। दैनिक समाचार पत्रों, न्यूज पेपरों, टी.वी. चैनलों, शहर के मुख्य बाजारों में लगे बड़े–बड़े होर्डिंग एवं ऑटो रिक्शों के पीछे लगे फ्लैक्स बैनरों से उदयपुर शहर के जन सामान्य में भी डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों को सुनने का उत्साह देखते ही बनता था। 24 मार्च को विश्वविद्यालय प्रांगण में शाकाहार पर हुये आपके प्रवचन ने लोगों के उत्साह को सौ गुणा बढा दिया। 25 मार्च को हजारों लोगों की उपस्थिति में आपका हीरक जयन्ती समारोह ऐतिहासिकता से सम्पन्न हुआ। समारोह में उदयपुर संभाग के 53 गाँवों की सैकड़ों संस्थाओं ने उपस्थित होकर आयोजन की गरिमा बढाई।

उदयपुर (राज.) : दिनांक २४ मार्च को सुखाडिया विश्वविद्यालय ऑडिटोरियम में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आयोजित सेमिनार में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का **शाकाहार** विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आई.वी.त्रिवेदी (डीन, पी.जी. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री मोहनलालजी वालावत तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री सुरेन्द्रजी संगावत एवं श्री चंदनमलजी दोशी उपस्थित थे।

इस सेमिनार में पीएच.डी., एम.बी.ए., एम.सी.ए., बी.सी.ए. विद्यार्थियों के अतिरिक्त सभी विभागों के प्रोफेसर एवं डीन भी उपस्थित थे, जिन्होंने डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री आई.वी.त्रिवेदी (डीन, पी.जी. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) ने डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान से प्रभावित होकर अगले 5 वर्षों तक उनका व्याख्यान (सेमिनार) विश्वविद्यालय में कराने की घोषणा की।

शाकाहार पर डॉ. भारिल्ल के व्याख्यान को सुनकर विश्वविद्यालय के 9 छात्रों ने आजीवन माँस भक्षण न करने की प्रतिज्ञा की।

कार्यक्रम का संचालन सुनीता वैद तथा आभार प्रदर्शन पीएच.डी शोधार्थी एवं फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

हीरक जयन्ती समारोह ह्न

दिनाँक 25 मार्च को टाउन हॉल स्थित सुखाड़िया रंगमंच पर अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम स्थल से 100 मीटर पहले डॉ. भारिल्ल को कार से उतारकर बैंड–बाजों के साथ कार्यक्रम स्थल के मुख्यद्वार तक लाया गया। मुख्य द्वार पर 10 ढोल वालों के साथ नाचते–गाते हुये उत्साही कार्यकर्ताओं ने डॉ. भारिल्ल को मंच तक पहुँचाया, वहाँ पहुँचने पर सभी वर्ग के लोगों ने डॉ. भारिल्ल का खडे होकर ताली बजाकर स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री भागचंदजी कालिका ने की। मुख्य अतिथि के रूप में समाजसेवी श्री माणकचंदजी ठाकुर्डिया तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री ताराचंदजी जैन (अध्यक्ष–महावीर दि.जैन चेरिटेबल ट्रस्ट), श्री टीकमचंदजी लिखमावत एवं श्री रोशनलालजी लिखमावत उपस्थित थे।

अतिथियों के स्वागत में अपने विचार व्यक्त करते हुये फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी जिनेन्द्रजी शास्त्री ने कहा कि 'डॉ. भारिल्ल ने गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा उद्घाटित जिस तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुंचाया है, यह हीरक जयंती उसी जिनवाणी और तत्त्वज्ञान का सम्मान है।'

श्री शास्त्री ने उदाहरण देते हुये कहा कि 'जब गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने टोडरमल स्मारक खोलने के कारण श्री पूरनचंदजी गोदीका का अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक बैण्ड बाजे के साथ स्वागत कराया था, गोदीकाजी की प्रतीक्षा में प्रवचन भी देर से प्रारंभ किया था, तो जिसने स्मारक में 550 विद्वान तैयार किये हैं, ऐसे डॉ. भारिल्ल का सम्मान क्यों नहीं किया जाए।'

इस अवसर पर पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी जैन, महिला फैडरेशन की अध्यक्ष श्रीमती किरण जैन एवं मंचासीन अतिथियों ने डॉ. भारिल्ल को 11 किलो की माला पहनाई एवं प्रशस्ति–पत्र भेंट किया। प्रशस्ति–पत्र का वाचन श्रीमती किरण जैन ने किया।

समारोह में मुख्यरूप से श्री आई.वी.त्रिवेदी (डीन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय), श्री के.सी. बोल्या, श्री ताराचंदजी जैन, श्री कुन्दनलालजी सामर, श्री तेजसिंहजी बोल्या, डॉ. शैलेन्द्रजी हिरण, श्री प्रमोदजी सामर, श्री कन्हैयालालजी दलावत, श्री राजमलजी जैन गोदणोत, श्री कचरुलालजी मेहता, श्री सुजानमलजी गदिया, श्री उदयलालजी भूतालिया, महंत महावीरजी चित्तौड़ा, श्री किरणचंद्रजी लसोड, सेठ श्री शांतिलालजी नागदा, श्री फतहलालजी नागदा, श्री बी.एल. थाया, श्री हीरालालजी अखावत, श्री रंगलालजी बोहरा, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी, ठाकुर संग्रामसिंहजी चुण्डावत, श्री विनोदजी भोजावत, श्री हीरालालजी सिंघवी, श्री भागचंदजी कालिका, श्री दीपचंदजी गांधी, श्री मोहनलालजी वालावत, श्री रमेशजी वालावत, श्री शांतिलालजी अखावत, श्री शशिकांतजी शाह, श्री विमलजी रठौड़िया, पण्डित अंकितजी जैन, पण्डित गजेन्द्रजी जैन, पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री, पण्डित धूलचंदजी नागदा, श्री जीतमलजी संगावत आदि अनेक विशिष्ट महानुभावों ने डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया।

इसके अतिरिक्त कुन्दकुन्द कहान वीतराग विज्ञान शिक्षण समिति, तेरापंथ श्वेताम्बर सभा, जैन श्वेताम्बर महासभा, मूर्तिपूजक श्री संघ, महावीर युवा मंच, वीतराग विज्ञान प्रचार प्रसार ट्रस्ट, चन्द्रप्रभ दि.जिन चैत्यालय मुमुक्षु मण्डल, चन्द्रप्रभ दि.जैन मंदिर गायरियावास, दिगम्बर

जैन समाज उदयपुर, आदिनाथ दि.जैन मंदिर केशवनगर, शांतिनाथ दि.जैन मंदिर नेमीनगर, आदिनाथ दि.जैन मंदिर सेक्टर–11, चंद्रप्रभ दि.जैन मंदिर, बीसा नरसिंहपुरा तेरापंथ समाज, दसा नरसिंहपुरा समाज, हुमड़ समाज, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, गोगुन्दा मित्र मण्डल आदि अनेक संस्थाओं की ओर से डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम में सेमारी, लकड़वास, चावण्ड, टोकर, लूणदा, भिण्डर, जगत, साकरोदा, डबोक, कोल्यारी, खाखड़, झाडोल, फलासिया, नाई, सागवाड़ा, सीमलवाड़ा, कल्याणपुर, आसपुर, केसरियाजी, खेरवाड़ा, ओड़ा, थोबावाड़ा, ओगणा, पड़ावली, गोगुन्दा, ईसवाल, खमनोर, बिच्छीवाड़ा, मगवास, बाघपुरा, मादड़ी, चित्तौड़, मंगलवाड़, चिकारडा, डूंगला, भादसोडा, बड़ीसादड़ी, छोटीसादड़ी, प्रतापगढ, जावद, मनासा आदि लगभग 53 गाँवों के लोगों ने पधारकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

समारोह के अन्त में डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि हीरक जयन्ती समारोह में मेरा नहीं; अपितु जिनवाणी का सम्मान हो रहा है, इस माध्यम से समाज अहिंसा व व्यसन मुक्ति की ओर अग्रसर हो रही है।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल ने णमोकार महामंत्र पर व्याख्यान देते हुये कहा कि यह मंत्र भिखारियों का मंत्र नहीं है, इस मंत्र से पापों का नाश या कोढ़ का रोग दूर होना मानना मिथ्या भ्रम है। यह मंत्र हमें भक्त से भगवान एवं मुनि से अरहंत बनने की प्रेरणा देता है।

कार्यक्रम का संचालन श्री आलोकजी पगारिया ने किया तथा आभार प्रदर्शन जिला प्रभारी पण्डित खेमचंदजी जैन ने किया।

भिण्डर में भी हीरक जयन्ती समारोह ह्न

भिण्डर–उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 26 मार्च को प्रात: अ.भा.जैन युवा फैडरेशन एवं पार्श्वनाथ दि.जैन मुमुक्षु मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मधु मेहता (उदयपुर जिला प्रमुख) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो.आई.वी. त्रिवेदी (डीन, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में युवा फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्री कन्हैयालालजी दलावत एवं श्री चंद्रशेखरजी सुथार (प्रधान–पंचायत समिति) मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल का परिचय श्री आदेश्वरलालजी सिंघवी ने कविता के माध्यम से दिया। तत्पश्चात् सकल जैन समाज द्वारा मेवाड़ी साफा, माला एवं शॉल ओढ़ाकर डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन भिण्डर की सकल जैन समाज ने ही नहीं; अपितु जैनेतर समाज के 12 प्रतिनिधियों एवं आस–पास के 9 गाँवों के प्रतिनिधियों ने भी किया। इसी क्रम में श्री सूरजमलजी फान्दोत, श्री निर्मलकुमारजी लिखमावत एवं श्री सुनीलजी वक्तावत द्वारा डॉ. भारिल्ल को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में कहा कि 75 वर्ष का हो जाना कोई बड़ी बात नहीं है, यह मेरा सम्मान नहीं है; अपितु माँ जिनवाणी का ही सम्मान है।

ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल को सूरजपोल से कार्यक्रम स्थल रावलीपोल चौक तक ढोल–नगाड़ों के साथ लाया गया था।

कार्यक्रम का संचालन व संयोजन पण्डित खेमचंदजी शास्त्री एवं पण्डित गजेन्द्रजी शास्त्री ने किया। मङ्गलाचरण श्रीमती सरोजजी वक्तावत एवं सुषमा लिखमावत ने किया।

समारोह से पूर्व डॉ. भारिल्ल के **णमोकार महामंत्र** पर मार्मिक व्याख्यान का लाभ मिला।

भिण्डर फोटो – डी एस सी 0071
उदयपुर फोटो – डी एस सी 0151
अन्य विज्ञापनों की फोटो (यदि संभव हो)
लूणदा का समाचार अंतिम पेज पर जा सकता है।

देवलाली प्रशिक्ष
पत्रि

ण शिविर की
का

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

50 बारहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अधिकार के अन्त में पण्डितजी सावधान करते हुए कहते हैं ह्न

''तथा कुदेवादिक के सेवन से जो मिथ्यात्वभाव होता है सो वह हिंसादिक पापों से बड़ा पाप है। इसके फल से निगोद, नरकादि पर्यायें पायी जाती हैं। वहाँ अनन्तकालपर्यन्त महासंकट पाया जाता है, सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति महा दुर्लभ हो जाती है।[१]

जिनधर्म में तो यह आम्नाय है कि पहले बड़ा पाप छुड़ाकर फिर छोटा पाप छुड़ाया है; इसलिए इस मिथ्यात्व को सप्त व्यसनादिक से भी बड़ा पाप जानकर पहले छुड़ाया है। इसलिए जो जीव पाप के फल से डरते हैं और अपने आत्मा को दु:खसमुद्र में नहीं डुबाना चाहते हैं; वे जीव इस मिथ्यात्व को अवश्य छोड़ें; निन्दा–प्रशंसादिक के विचार से शिथिल होना योग्य नहीं है। कहा भी है ह्न

(वसंततिलका)

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वास्तु मरणं तु युगान्तरे वा
न्यायात्पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:।।

ह्न नीतिशतक : छन्द ८४

कोई निन्दा करता है तो निन्दा करो, स्तुति करता है तो स्तुति करो, लक्ष्मी आओ व जहाँ–तहाँ जाओ तथा अभी मरण होओ व युगान्तर में होओ; परन्तु नीति में निपुण पुरुष न्यायमार्ग से एक डग भी चलित नहीं होते।

ऐसा न्याय विचारकर निन्दा–प्रशंसादिक के भय से, लोभादिक से, अन्यायरूप मिथ्यात्व प्रवृत्ति करना युक्त नहीं है।

अहो ! देव–गुरु–धर्म तो सर्वोत्कृष्ट पदार्थ हैं, इनके आधार से धर्म है। इनमें शिथिलता रखने से अन्य धर्म किसप्रकार होगा ? इसलिए बहुत कहने से क्या ? सर्वथा प्रकार से कुदेव–कुगुरु–कुधर्म का त्यागी होना योग्य है।

कुदेवादिक का त्याग न करने से मिथ्यात्वभाव बहुत पुष्ट होता है और वर्तमान में यहाँ इनकी प्रवृत्ति विशेष पायी जाती है; इसलिए इनका निषेधरूप निरूपण किया है। उसे जानकर मिथ्यात्वभाव छोड़कर अपना कल्याण करो।[२]''

देखो, यहाँ पण्डित टोडरमलजी मिथ्यात्व को, सप्त व्यसनादि से भी बड़ा पाप बता रहे हैं, हिंसादि से भी बड़ा पाप बता रहे हैं, महासंकट बता रहे हैं, नरक–निगोद का कारण बता रहे हैं; उसे अनंत संसार का कारण बता रहे हैं और उस मिथ्यात्व से बचने के लिए हर संभव प्रयत्न करने के लिए अनुरोध कर रहे हैं। कह रहे हैं कि यदि तुम स्वयं को दु:ख समुद्र में डूबने से बचाना चाहते हो तो इस मिथ्यात्व को अवश्य छोड़ो। उनकी करुणा तो देखो।

पण्डित टोडरमलजी ने अपने जीवन की बाजी लगाकर मौत की कीमत पर इन भूलों को निकाल–निकाल कर हमें बताया है; अत: हमें इन्हें बारीकी से समझ कर पूरा–पूरा लाभ लेना चाहिए।

जब हम यह बात जगत के सामने प्रस्तुत करते हैं तो लोग कहते हैं कि इसीप्रकार की आलोचना करके पण्डित टोडरमलजी असमय में षड़यंत्र के शिकार हो गये और अब आप भी उन्हीं के मार्ग पर चलकर, वैसी ही बातें कर रहे हैं। क्या आपको नहीं लगता कि आप भी तो बहुत बड़ा खतरा मोल ले रहे हैं।

भाई, आप बात तो ठीक ही कहते हैं; पर आप ही बताइये कि यह बात कहने में तो मात्र उस एक भव का ही खतरा है, जो लगभग बीत चुका है; क्योंकि **अब हम तो जीवन के अन्तिम पड़ाव पर ही हैं; किन्तु यदि भय से यह बात ही न कहें तो लाखों लोगों को अनन्त भवों का खतरा है; क्योंकि वे बहुमूल्य मनुष्य भव पाकर इन कुधर्म की प्रवृत्तियों में गंवाकर अनन्त जन्म–मरण के चक्र में ही पड़े रह जावेंगे।**

यद्यपि हम अच्छी तरह जानते हैं कि जिन लोगों के अभी अनंत भव शेष हैं, उन्हें हमारे इस प्रतिपादन को सुनकर, पढ़कर अनंत क्रोध भी उत्पन्न हो सकता है और वे कुछ भी कर सकते हैं; तथापि हमें इस बात का भी पक्का भरोसा है कि केवली भगवान के ज्ञान में जो आया होगा, होगा तो वही; किन्तु यदि **हमारी बात सुनकर–पढ़कर मुट्ठीभर लोगों की वृत्ति और प्रवृत्ति में कुछ अंतर आ गया तो हमारा यह प्रयास सफल ही समझो।**

हम यह भी जानते हैं कि हमारी यह बात उन्हीं के समझ में आयेगी, जिनके संसार का अन्त आ गया होगा। हमें इस बात को प्रस्तुत करने का जो तीव्र विकल्प आ रहा है; वह इस बात का प्रतीक है कि कुछ न कुछ लोगों का काल पक गया है; अन्यथा हमें भी इतना तीव्र विकल्प क्यों आता ?

आप यह कल्पना कीजिए कि यदि यही सोचकर टोडरमलजी भी यह न लिखते और गुरुदेवश्री कानजी स्वामी भी इन बातों का खुलासा नहीं करते तो यह गंभीर तत्त्वज्ञान आज हमें कहाँ से और कैसे प्राप्त होता ?

जब हम उनके बताये मार्ग पर चले हैं, उनके अनुयायी हैं; तो फिर हमें उन जैसा साहस भी तो रखना ही होगा।

आप चिन्ता न करें, प्रत्येक कार्य अपनी योग्यता के अनुसार स्वकाल में ही होगा।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, छठवाँ अधिकार, पृष्ठ १९१ २. वही, पृष्ठ १९२

गृहीत मिथ्यात्व को छोड़ने के लिए कुदेव, कुगुरु और कुधर्म संबंधी प्रवृत्तियों को छोड़ना अत्यन्त आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है; अत: उनका निरूपण पूरी स्पष्टता से होना अत्यन्त आवश्यक है। यही सोचकर अत्यन्त करुणाभाव से पण्डित टोडरमलजी के समान ही हम यह प्रयास कर रहे हैं, किसी को पीड़ा पहुँचाने के लिए नहीं; अत: हमें विश्वास है कि आत्मार्थी जगत में इस निरूपण को साम्यभाव से ही ग्रहण किया जायेगा।

इसप्रकार हम देखते हैं कि इस छठवें अधिकार में भावों और क्रिया की भूल बताई गई है; आगे सातवें अधिकार में समझ की भूल बतायेंगे।

तात्पर्य यह है कि इस छठवें अधिकार में शिथिलाचारी क्रियाकाण्डी लोगों की भूलों की बात की है और आगे सातवें अधिकार में आत्मा-परमात्मा की चर्चा करनेवाले पण्डितों की भूलों की बात करेंगे।

इसप्रकार अब यहाँ छठवें अधिकार की चर्चा से विराम लेते हैं। ●

अष्टाह्निका महापर्व सम्पन्न

1. कोटा (राज.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक श्री दि. जैन मुमुक्षु मण्डल एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन में पण्डित विनोदकुमारजी जैन गुना द्वारा तीन लोक की रचना, मध्य लोक एवं जीवसमास प्रवचन हुये। श्री सीमंधर जिनालय इन्द्रविहार में पण्डित नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जबलपुर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से सरल व सुबोध शैली में प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनाँक 1 मार्च को श्री पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र बिजौलिया की यात्रा का विशेष कार्यक्रम रखा गया। यहाँ पण्डित विनोदकुमारजी जैन के प्रवचन का लाभ मिला। **– माणकचंद कासलीवाल**

2. अहमदाबाद (नवरंगपुरा) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन के प्रात: समयसार की गाथा 31 एवं सायं मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से हुये प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचनों में लगभग 200-250 लोगों ने तत्त्वज्ञान का लाभ प्राप्त किया।

3. उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक 170 तीर्थंकर विधान एवं 20 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के प्रारंभ के दो दिनों तक समयसार की 1 से 38 वीं गाथा तक प्रवचनों का तथा ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: समयसार की गाथा-14 पर तथा सायं नय-निक्षेप पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधि-विधान के कार्य प्रारंभ के चार दिनों तक मंगलायतन से पधारे पण्डित संजयजी शास्त्री ने तथा अन्तिम चार दिनों तक श्री दीपकजी भोपाल ने सम्पन्न कराये।

इस पावन अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर द्वारा अपनी सुपरिचित रोचक शैली में बच्चों की कक्षा ली गई।

4. मुम्बई : यहाँ अष्टाह्निका महापर्व के पावन प्रसंग पर दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक मुम्बई के विभिन्न उपनगरों में विद्वानों को आमंत्रित कर व्याख्यानों का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत **सीमंधर जिनालय** में पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, **दादर** में पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **मलाड** में पण्डित जयकुमारजी बारां, **मलाड (एवरशाइन नगर)** में पण्डित विपिनजी मुम्बई, **बोरीवली** में पण्डित देवेन्द्रजी बिजौलिया, **दहीसर** में पण्डित अश्विनजी मलाड, **भायंदर** में पण्डित सुबोधजी सिवनी एवं **घाटकोपर** में पण्डित गुलाबचंदजी बीनावालों का स्थानीय समाज को लाभ मिला।

5. अजमेर (राज.) : यहाँ दिनाँक 21 से 28 फरवरी तक श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री दि. जैन सीमंधर जिनालय में अष्टाह्निका महापर्व सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आध्यात्मिक प्रवक्ता डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी द्वारा प्रतिदिन समयसार की 6वीं, 11वीं, 19वीं एवं 69वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये। इसके अतिरिक्त प्रात:काल तत्त्वार्थसूत्र महामंडल विधान का आयोजन पण्डित सुनीलजी धवल के निर्देशन में किया गया। दोपहर में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी. डी. प्रवचनों का लाभ मिला।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत ज्ञानवर्धक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें षट्लेश्या, जैनधर्म क्या, सदाचार, इच्छायें, नयों का स्वरूप, कर्मबन्ध की प्रक्रिया, दर्शनमोह का स्वरूप आदि विषयों पर अनेक वक्ताओं ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर लगभग 100 साधर्मियों ने तत्त्वज्ञान का लाभ लिया। कार्यक्रम का संचालन व निर्देशन स्थानीय विद्वान पण्डित अश्विनजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया। **– अश्विन नानावटी शास्त्री**

6. जयपुर : यहाँ श्री दि. जैन मंदिर मुशरफान, जौहरी बाजार में पर्व के अवसर पर श्री पंचमेरु नन्दीश्वर मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में सम्पन्न हुये। इस प्रसंग पर श्री कमलचन्दजी मुशरफ एवं श्री विजयकुमारजी सौगानी का विशेष सहयोग रहा। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति का सुन्दर आयोजन किया गया।

(आगामी कार्यक्रम ...)

बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ रविवार दिनाँक 25 अप्रैल को अहिंसा व्याख्यान आयोजन समिति के तत्त्वावधान में डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मनाया जायेगा, जिसका निर्देशन प्रो. आई.बी.त्रिवेदी (डीन, पी.जी. मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय) तथा संयोजन फैडरेशन के प्रदेश प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री करेंगे।

17 अप्रैल 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

शोक समाचार

१. वर्धा (महा.) निवासी श्रीमती स्नेहप्रभा सु. शाह धर्मपत्नी श्री सुदर्शनकुमारजी शाह का दिनाँक 19 मार्च को 83 वर्ष की आयु में शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

२. कर्रापुर-सागर निवासी श्री मुन्नालालजी दिवाकर का दिनाँक 29 मार्च को शांत परिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक श्री सौरभ जैन के पिताजी थे। आपकी स्मृति में वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 1000/-रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति की प्राप्ति करें - यही भावना है।

एरणाकुलम में विधान संपन्न

एरणाकुलम-कोचीन (केरल) : यहाँ दिनाँक 2 से 4 फरवरी तक श्री महावीर दि. जैन मुमुक्षु चैत्यालय में प्रथम बार श्री महावीर पंचकल्याणक विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन के समयसार एवं श्रावकाचार पर दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

ज्ञातव्य है कि इस विधान का आयोजन श्री पद्मप्रभ भगवान के निर्वाणोत्सव एवं बासंतीबेन नलिनभाई के नवीन गृह 'चैतन्य बसेरा' के मंगल प्रवेश के उपलक्ष्य में किया गया था।

लूणदा में हीरक जयन्ती

लूणदा-उदयपुर (राज.) : पूरे देश में चल रहे हीरक जयन्ती समारोह के उत्साह की लहर लूणदा को भी छूकर निकल गई...डॉ. भारिल्ल के तूफानी दौरे में विविध कार्यक्रमों की व्यस्तता के मध्य दिनाँक 25 मार्च को लूणदा वासियों को भी मिला डॉ.भारिल्ल की हीरक जयंती मनाने का अवसर...।

लूणदा जैसे छोटे से गाँव में लगभग 250 लोगों की उपस्थिति में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर शाश्वत चेरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री चाँदमलजी कीकावत, श्री ललितजी कीकावत, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाडा, श्री सुमतिलालजी बाँसवाड़ा, श्री अंकितजी जैन, श्री रजनीशजी जैन आदि ने डॉ. भारिल्ल का प्रतीक चिह्न, प्रशस्ती, शॉल आदि भेंट कर भावभीना अभिनन्दन किया। आयोजन में गाँव के जैन-अजैन अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान करके अपने को गौरवान्वित महसूस किया।

इस प्रसंग पर कूण, कानोड़, बोहेड़ा आदि गाँवों के लोगों ने भी लूणदा आकर डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन किया।

सम्मान समारोह के पूर्व डॉ. भारिल्ल के **अहिंसा** विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ उपस्थित जन समुदाय को मिला।

सभा का संचालन पं. अंकितजी शास्त्री तथा आभार प्रदर्शन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने किया।

मूड़बद्री में अनेक शिलान्यास

मूड़बद्री (कर्नाटक) : यहाँ दिनाँक 28 मार्च, 2010 को महावीर जयंती के पावन अवसर पर भट्टारकश्री चारुकीर्तिजी मूडबद्री के सानिध्य में **1008 सीमन्धर जिनालय का शिलान्यास** समारोह श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर की उपस्थिति में स्व. सन्तोषबेन डॉ. राजेश जैन चेरिटेबल ट्रस्ट एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के मार्मिक प्रवचन के साथ-साथ ही पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, पण्डित शांतिलालजी सोगानी महिदपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल, पण्डित अशोकजी उज्जैन आदि के समागम का लाभ मिला।

इस कार्यक्रम में **20 कमरों की धर्मशाला का शिलान्यास** श्रीमती ममता-अनिल जैन, श्रीमती अनिता-सुजय जैन नागपुर तथा **वेदी शिलान्यास** स्व. राजकुमारजी की स्मृति में श्रीमान निहालचंदजी कानपुर द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ ही **स्वाध्याय भवन एवं पाठशाला भवन का शिलान्यास** भी संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मूडबद्री के ट्रस्टीगणों एवं एक हजार साधर्मियों की उपस्थिति में इन्दौर के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री एम.के.जैन ने प्रथम तगारी तथा ब्र. मालतीबेन सोनगढ व ब्र. रमाबेन देवलाली ने प्रथम ईंट रखने का सौभाग्य प्राप्त किया।

सायंकाल 40 गाँवों के लगभग 2500 साधर्मियों की उपस्थिति में समाजसेवी श्री सुरेन्द्रजी हेगडे की अध्यक्षता में 4 पाठशालाओं का शुभारंभ ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर के सहयोग से किया गया।

शिलान्यास के समस्त कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

समस्त कार्यक्रमों में केन्द्र के पूर्व वित्त राज्यमंत्री श्री धनंजयकुमारजी, वर्तमान विधायक श्री अभयकुमारजी जैन, आयकर आयुक्त श्री पवनजी वैद, श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे। सभा के अन्त में श्री भरतभाई शाह (अमेरिका) ने आभार व्यक्त किया।

ज्ञातव्य है कि यह निर्माणकार्य श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट, इन्दौर के विशेष सहयोग से कराया जा रहा है।

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127

ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना

ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित दिनेशभाई शहा एवं श्रीमती उज्ज्वलाबेन शहा, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन, जबलपुर

प्रशिक्षण कक्षाओं का संचालन पण्डित कोमलचंदजी टडा एवं पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा करेंगे।

1. स्व. पुष्पाबेन कांतिभाई मोटानी एवं स्व. कल्पनाबेन विपुलभाई मोटानी की स्मृति में हस्ते कान्तिभाई मोटानी परिवार, मुम्बई 2. स्व. मधुकान्ताबेन रमेशभाई मेहता की स्मृति में हस्ते रमेशभाई मंगलजी मेहता परिवार, मुम्बई 3. श्रीमती वीणाबेन जगदीशभाई मोदी परिवार, मुम्बई

प्रात: 10 बजे विद्वान पण्डित श्री डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के 75वें जन्मदिवस पर अभिनन्दन समारोह

अध्यक्ष – स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्तिजी, मूढबिद्री

मुख्य अतिथि – श्री नेमिषभाई शांतिलाल शाह, मुम्बई

विशिष्ट अतिथि – श्री रसिकलाल एम.धारीवाल, पूना (माणकचंद ग्रुप) अनंतभाई ए. शेठ, मुम्बई श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर, श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स दिल्ली, श्री अजितभाई जैन बड़ौदा

रमेशभाई मेहता परिवार

कान्तिभाई मोटानी परिवार

जगदीशभाई मोदी परिवार मुम्बई

श्रीमती वीणाबेन जगदीशभाई मोदी, मुम्बई

श्री रमेशभाई मंगलजी मेहता, मुम्बई

श्री कान्तिभाई मोटानी, मुम्बई

श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर

रात्रि.....बजे से

2491044

2491045

श्री योगसार मण्डल विधान संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ श्री महावीर दि. जैन मंदिर के 18 वें वार्षिकोत्सव के पावन प्रसंग पर श्री योगसार मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित ज्ञानचंदजी सोनागिरि द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं योगसार ग्रंथ के आधार से मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त डॉ. मुकेशजी शास्त्री तन्मय, स्थानीय विद्वान पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री, पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री, पण्डित पंकजजी शास्त्री, पण्डित धवलजी शास्त्री आदि विद्वानों का समय–समय पर लाभ मिला।

इस विधान का आयोजन श्रीमती शीलादेवी मुलायमचंदजी सिंघई परिवार द्वारा किया गया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री कल्पेशकुमार विनोदकुमार जैन नागपुर थे तथा मंगल कलश स्थापना डॉ. विमला सिंघई, डॉ. शकुन सिंघई, श्रीमती चित्रा सिंघई परिवार द्वारा हुई।

इस वार्षिकोत्सव के पावन प्रसंग पर भगवान सुपार्श्वनाथ के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष्य में डॉ. सुरेशजी सिंघई, श्री शिखरचंदजी मोदी, श्री जयकुमारजी देवड़िया परिवार द्वारा निर्वाण लाडू चढ़ाया गया तथा भगवान चन्द्रप्रभ का केवलज्ञान कल्याणक उत्साह के साथ मनाया गया। विधान के संपन्न होने के उपलक्ष्य में विशाल जिनवाणी शोभायात्रा जुलूस का आयोजन किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य डॉ. विनोदजी शास्त्री चिन्मय के कुशल निर्देशन में श्री अनुभवजी जैन गुना के सहयोग से संपन्न हुये।

–मनीष सिद्धांत एवं अखिलेश जैन

हार्दिक बधाई !

सीकर निवासी श्री फतेहचंदजी जैन एवं श्रीमती सुलोचनादेवी जैन (धोदवाले) के दाम्पत्य जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाई। इस अवसर पर वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 250–250/– दानस्वरूप प्राप्त हुये।

शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

चैतन्यधाम (गुज.) : यहाँ दिनाँक 25 से 30 दिसम्बर तक अ.भा.जैन युवा फैडरेशन द्वारा ग्यारहवाँ तत्त्वज्ञान शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित निलेशभाई मुम्बई एवं पण्डित दीपकभाई अहमदाबाद के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। **– संदीप शास्त्री**

डॉ. भारिल्ल का 2010 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 28वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क–सूत्र	दिनांक
1.	लन्दन	**Bhimji Bhai Shah 192-384-0833** **bhimji@hevika.com** **Jayanti Bhai (Gutka)** **0044-208 907 8257 (H)**	4 से 9 जून
2.	लास एंजिल्स	**Atul Khara 469-831-2163** **Naresh Palkhiwala (R) 562-404-1729** **(O) 626-814-8425 ext.8725** **naresh.palkhiwala@westcov.org**	11 से 17 जून
3.	मियामी	**Mahendra Shah (R) 305-595-3833** **(O) 305-371-2149** **E-mail : bhitap@bellsouth.net**	18 से 24 जून
4.	शिकागो	**Niranjan Shah (R) 847-330-1088** **Bipin Bhayani (O) 815-939-3190** **(R) 815-939-0056 (F) 815-939-3159**	25 से 30 जून
5.	फिला–डेल्फिया (शिविर)	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902** **insty@verizon.net**	1 से 4 जुलाई
6.	सान् फ्रांसिस्को	**Ashok Sethi (R) 408-517-0975** **ashok_k_sethi@yahoo.com**	5 से 11 जुलाई
7.	डलास	**Atul Khara 469-831-2163** **972-424-4902** **insty@verizon.net**	12 से 16 जुलाई

पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, देवलाली भी कुछ वर्षों से नियमित धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं, उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न 9 जून से 12 जून – **ह्यूस्टन**, 13 जून से 18 जून – **डलास**, 19 जून से 25 जून – **सॉनफ्रांसिस्को**, 26 से 30 जून – **सॉनडियागो**, 1 से 4 जुलाई – **फिलाडेल्फिया (शिविर)**, 5 से 14 जुलाई – **मियामी**, 15 से 18 जुलाई – **न्यूयार्क**, 19 से 25 जुलाई – **शिकागो**।

समारोह की विशेषता यह थी कि
दिगम्बर समाज ने तो बिना किसी पूर्वाग्रह के
कता प्रदर्शित करते हुये कार्यक्रम को सफल

वास्तव में तत्त्व का प्रचार–प्रसार डॉ.भारिल्ल ही कर रहे हैं और आगे भी करने वाले यही हैं। –गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

एक हुकमचंद ही सत्य का कथन करने वाला तैयार हो गया है।
– गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

डॉ. भारिल्ल : मनीषियों की दृष्टि में

वर्तमान तत्त्व की प्रभावना में उसका (डॉ. भारिल्ल का) बड़ा हाथ है, स्वभाव का भी सरल है।...तत्त्व की बारीक से बारीक बात पकड़ लेता है, पण्डित हुकमचंद बहुत ही अच्छा है। **– गुरुदेवश्री कानजीस्वामी**

धर्मानुरागी डॉ.भारिल्ल ने समयपाहुड का जैसा गम्भीर चिंतन मनन किया है, उसे देखकर यदि उनका नाम समयसार भारिल्ल होता तो अधिक उपयुक्त होता। **– आचार्य विद्यानंदजी**

मेरा आत्मा, मेरा रोम–रोम आपके (डॉ.भारिल्ल के) साहित्य को पढकर गद्‌गद् हो उठता है। **ह्न आचार्य धर्मभूषणजी महाराज**

क्रमबद्धपर्याय पुस्तक वर्तमान में सारस्वत विद्वत् लोक में प्रज्वलित प्रकाशमान ध्रुवतारा है। **ह्न स्वस्तिश्री भुवनकीर्ति भट्टारकस्वामीजी**

आपके द्वारा लिखा गया साहित्य युगों–युगों तक जैन शासन को टिकाये रखने में स्तंभ का कार्य करेगा। इतिहास इसकी साक्षी देगा।
ह्न पण्डित नेमीचन्द पाटनी, आगरा

डॉ. साहब की लेखनी पर सरस्वती का वरदान है।
ह्न पण्डित जगनमोहनलाल शास्त्री, कटनी

भारिल्लजी आगम के आलोक में निर्विवाद रूप से युगों युगों तक श्रद्धा–विनय के साथ स्मृत किये जाते रहेंगे।
– प्रतिष्ठाचार्य विमलकुमार जैन – सम्पादक (वीतराग–वाणी)

डॉ. भारिल्ल ऐसे विशिष्ट व्यक्ति हैं, जो सिर्फ अपने मिशन में व्यस्त हैं और यश उनके पीछे भागता है। **ह्न डॉ. राजीव प्रचंडिया**

विषय की गंभीरता को बगैर कोई क्षति पहुँचाये, ज्ञान की गहराईयों में तत्क्षण डुबो देने की कला में माहिर, संपूर्ण भारत के इस श्रेष्ठ वक्ता की वक्तृत्व कला का घोर विरोधी भी नमन करते है।
– अशोक बड़जात्या, इन्दौर

डॉ. भारिल्ल के समन्वय के पाँच सूत्र

1. भूतकाल को भूल जाओ, इसकी चर्चा मत करो।
2. भविष्य के लिये शर्त

अथाह सागर
गरजती तरंगे
देखकर
अनायास ही आपकी
मूरत उभरती
चिंतवन की गहराई
व गंभीरता के दर्शन देते।।

व्योम की विशालता में
आपकी तस्वीर दिखती
असीमित ज्ञान को
अपने में समेटे।।

अनवरत गतिमान
सरिता में
कर्णप्रिय गुंजायमान
धारा में
वही सूरत फिर उभरती
वाणी की मधुरता से
मन को मोहित करते।।

तीर के तीखेपन में
तूफान की तीव्रता में
वही अक्स
फिर उमड़ता
तर्क की तीक्ष्णता से
पाखण्ड का खण्डन करते
एक नया आयाम धरते।।

धरा होती
पल्लवित
तरुओं से आच्छादित
लेखन की सघनता से
नूतन ज्ञान के अंकुर बोते
पाठकों की चित्तधरा में
आप ही आप दिखाई देते।।

भारवि के तेज में
आपके
सर्वांगीण व्यक्तित्व के
प्रफुल्लित आदर्श जीवन के
दर्शन होते।।

हर अंश में प्रकृति के
गुण फैले हैं आपके
गुरुवर हैं
पूजनीय हैं
वंदनीय हैं
चरण आपके....

ह्न सुधीर जैन, अमरमऊ
शास्त्री तृतीय वर्ष

एक तो स्वयं जानते नहीं और जाननेवालों की सुनते नहीं

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

(नोट – ९ अप्रैल २००८ को प्रात: ६ बजकर २० मिनिट पर साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के आनेवाले प्रवचनों में समयसार की चौथी गाथा और उसकी टीका पर हुये अत्यन्त उपयोगी प्रवचन का महत्त्वपूर्ण अंश जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ यहाँ दिया जा रहा है। ह्न प्रबंध संपादक)

आत्मानुभव से रहित अज्ञानी जगत की दुर्दशा का चित्र प्रस्तुत करते हुए आचार्य अमृतचन्द्रदेव समयसार की चौथी गाथा की टीका में कहते हैं कि यह लोक संसाररूपी चक्की के पाटों के बीच अनाज के दानों के समान पिस रहा है, मोहरूपी भूत इसे पशुओं के समान जोत रहा है, तृष्णारूपी रोग से यह जल रहा है, विषयभोग की मृगतृष्णा में फंसकर मृग की भांति भववन में भटक रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि पंचेन्द्रिय विषयों में उलझा हुआ यह अज्ञानी लोक परस्पर आचार्यत्व भी करता है। अज्ञानी लोग विषय–कषाय की चतुराई एक–दूसरे को बताते हैं, सिखाते हैं। पैसा कैसे कमाना, उसे कैसे भोगना आदि बातें एक–दूसरे को बताते हैं; उन्हीं कार्यों को करने की प्रेरणा भी देते हैं।

यदि कदाचित् ऐसे लोग धर्म के क्षेत्र में भी आ जावे तो भी उनकी यह आदत छूटती नहीं है। यहाँ भी वे एक–दूसरे को सिखाते हैं कि चन्दा कैसे इकट्ठा करना और उसका अपनी रुचि के अनुकूल खर्च कैसे करना, कैसे भोगना; उसके दम पर अपना नेतृत्व कैसे कायम करना।

उक्त संदर्भ में मैंने सन् १९७७ ई. में त्याग धर्म की चर्चा करते समय लिखा था ह्न

''समाज में त्याग धर्म के सच्चे स्वरूप का प्रतिपादन करनेवाला विद्वान् बड़ा पण्डित नहीं; बल्कि वह पेशेवर पण्डित बड़ा पण्डित माना जाता है, जो अधिक से अधिक चन्दा करा सके। यह उस देश का, उस समाज का दुर्भाग्य ही समझो, जिस देश व समाज में पण्डित और साधुओं के बड़प्पन का नाप ज्ञान और संयम से न होकर दान के नाम पर पैसा इकट्ठा करने की क्षमता के आधार पर होता है।

इस वृत्ति के कारण समाज और धर्म का सबसे बड़ा नुकसान यह हुआ कि पण्डितों और साधुओं का ध्यान ज्ञान और संयम से हटकर चन्दे पर केन्द्रित हो गया है। जहाँ देखो, धर्म के नाम पर, विशेषकर त्यागधर्म के नाम पर, दान के नाम पर, चन्दा इकट्ठा करने में ही इनकी शक्ति खर्च हो रही है, ज्ञान और ध्यान एक ओर रह गये हैं।

यही कारण है कि उत्तम त्यागधर्म के दिन हम त्याग की चर्चा न करके दान के गीत गाने लगते हैं। दान के भी कहाँ, दानियों के गीत गाने लगते हैं। दानियों के गीत भी कहाँ, एक प्रकार से दानियों के नाम पर यश के लोभियों के गीत ही नहीं गाते; चापलूसी तक करने लगते हैं।

यह सब बड़ा अटपटा लगता है, पर क्या किया जा सकता है ह्नसिवाय इसके कि इससे हम स्वयं बचें और त्यागधर्म का सही स्वरूप स्पष्ट करें; जिनका सद्भाग्य होगा वे समझेंगे, बाकी का जो होना होगा सो होगा।[१]''

१. धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ १२८

त्यागधर्म संबंधी इस प्रकरण की चर्चा स्वामीजी भी भरपूर किया करते थे। वे धर्म के दशलक्षण पुस्तक का उक्त अंश लोगों को बताकर कहते थे कि देखो कैसा सटीक लिखा है।

हाँ, तो अपनी बात यह चल रही थी कि ये लोग धर्म क्षेत्र में आकर भी, धर्म के नाम पर सम्पूर्ण जीवन समर्पित करके भी, आत्मकल्याण की भावना से घर–बार छोड़कर भी, ब्रह्मचर्यादि व्रतों, अणुव्रतों–महाव्रतों को धारण करके भी अपनी पुरानी आदत नहीं छोड़ पाते और अपने को धर्म के नाम पर लौकिक कार्यों में ही उलझाये रखते हैं।

संस्थायें खड़ी करना, नये–नये संस्थानों को खड़ा करना; उनके नाम पर चन्दा इकट्ठा करना, तीर्थों के झगड़ों में उलझना, उनके नाम पर ऐसे काम करना; जो किसी भी रूप में ठीक नहीं माने जा सकते। क्या आप नहीं जानते हैं कि आज कल क्या–क्या नहीं होता है, अदालतों में।

गंभीरता से विचार करने की बात तो यह है कि जिन्होंने आत्मकल्याण की भावना से शादी नहीं की, घर का धंधा–पानी भी छोड़ा, घर छोड़ा; उन्हें तो इसप्रकार के कामों में नहीं उलझना चाहिए। वे तो अपना रहने का स्थान और करने का काम, आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से चुन सकते हैं; क्योंकि वे अपने स्थान और कार्य के चुनाव में पूरी तरह आजाद हैं।

जिन गृहस्थ आत्मार्थी भाइयों को, विद्वानों को अपनी आजीविका स्वयं करनी है; वे तो स्थान और काम चुनने के लिए आजाद नहीं हैं; क्योंकि उन्हें तो जहाँ आजीविका का साधन मिलेगा अर्थात् नौकरी मिलेगी, व्यापार चलेगा; वहाँ रहना होगा। इसीप्रकार काम चुनने में भी वे आजाद नहीं हैं; अपनी–अपनी योग्यतानुसार जहाँ जो काम मिलेगा; वही काम करना होगा। अत: उनके रहने का स्थान और करने का काम उनकी रुचि का द्योतक नहीं है; पर सांसारिक काम छोड़कर आत्मकल्याण करने की भावना वाले गृहत्यागियों का रहने का स्थान और करने का काम उनकी आंतरिक रुचि का द्योतक अवश्य हैं।

उन्हें क्या जरूरत है ऐसे भीड़बाड़ वाले स्थानों पर रहने की, जहाँ न तो आध्यात्मिक वातावरण ही है और न संयम की साधना के योग्य अवसर। जहाँ न्याय–अन्याय पूर्वक भोग–सामग्री जोड़ने और सारी मर्यादायें तोड़कर उन्हें भोगने का ही वातावरण है; ऐसे मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि जैसे स्थानों का चुनाव उनकी किस वृत्ति का परिणाम हो सकता है; इसके बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

मेरी दृष्टि में तो उन्हें रहने के लिए ऐसा शान्त–एकान्त स्थान चुनना चाहिए कि जहाँ उन्हें कुछ सीखने को मिले और यदि वे स्वयं सक्षम विद्वान हैं तो उन्हें कुछ सीखने की भावना रखनेवाले आत्मरुचिवंत श्रोता

मिलें। न तो जहाँ समझानेवाले हों और न समझनेवाले ही, तत्त्वचर्चा करने के लिए बराबरी के आत्मार्थी भी न हों, उनका वहाँ रहना कहाँ तक उचित है ? क्या यह गंभीरता से विचार करने की बात नहीं है ?

प्रवचनसार मैं तो अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि या तो गुणाधिक की संगति में रहना चाहिए या फिर समान गुणवालों की संगति में रहना उचित है। यदि हम उनकी संगति में रहेंगे कि जो निरन्तर आध्यात्मिक शास्त्रों के अध्ययन-मनन में रहते हैं; तो हमें अध्यात्म क्षेत्र में कुछ न कुछ मिलेगा ही; वे बातें भी समझने के लिए मिल सकती हैं कि जिन्हें हम सतत् स्वाध्याय करके भी नहीं समझ सकते। प्रत्येक व्यक्ति को विशिष्ट विद्वानों का सत्समागम सहज संभव नहीं है; अत: उन लोगों को बराबर का अभ्यास करनेवालों की संगति में रहना उचित है।

पंडित टोडरमलजी मोक्षमार्गप्रकाशक में लिखते हैं कि प्रथम तो गहराई से आध्यात्मिक शास्त्रों का स्वयं स्वाध्याय करें। पर जब प्रयत्न करने पर भी जो बात समझ में न आये तो अधिक अभ्यासी गुरुजनों से पूछे, वे न मिले तों साधर्मियों से तत्त्वचर्चा करे; उनसे जो सुनने को मिले उस पर गंभीरता से चिन्तन करे और यह तबतक करता रहे कि जबतक वस्तुस्वरूप पूरी तरह स्पष्ट न हो जाये। इसके अतिरिक्त और जो कुछ भी धर्म के नाम पर किया जाता है, उससे आत्मकल्याण होनेवाला नहीं है।

धर्म के नाम पर, तीर्थक्षेत्र के नाम पर ऐसे वियावान जंगल में जावेंगे कि जहाँ न कोई धर्म की बात सुनने वाला है और न सुनानेवाला; चर्चा करनेवाला भी कोई नहीं। बस मजदूरों को डांटते-फटकारते रहो और चन्दा मांग-मांग कर महल चिनवाते रहो या फिर अदालतों के चक्कर काटते रहो या फिर हजारों बार बोली गई स्तुतियों और पूजनों पर नाच-नाच कर गाते रहो, गवाते रहो, नचाते रहो। आत्मकल्याण के मार्ग में क्या होनेवाला है इन सबसे।

अरे भाई ! स्थान के साथ-साथ काम के बारे में भी गंभीरता से चुनाव करने की बात है। वे लोग अपने को आध्यात्मिक शास्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने के, सुनने-सुनाने के, लिखने-लिखाने के, छपाकर घर-घर पहुँचाने के ज्ञानयज्ञ में क्यों नहीं जोड़ते; जिससे स्व-पर का आत्मकल्याण हो ?

आचार्य अमृतचन्द्र आगे लिखते हैं कि एकत्व-विभक्त आत्मा के बारे में न तो स्वयं कुछ जानता है और न जाननेवाले की सेवा करता, न उनका समागम करता है, उनसे सीखने-समझने की कोशिश भी नहीं करता, यदि आगे होकर भी वे कुछ सुनाये-समझायें तो उनकी बात पर ध्यान ही नहीं देता; इसलिए अनादिकाल से संसार में भटक रहा है।

आचार्य कहते हैं कि जाननेवालों की सेवा नहीं करता। सेवा करने का आशय मात्र उनके पैर दबाना नहीं है, उनके लिए लौकिक अनुकूलतायें जुटाना नहीं है; अपितु उनके प्रतिपादन से लाभ उठाना है। वे आत्मा-परमात्मा के संदर्भ में जो कुछ भी समझाते हैं; उसे गहराई से समझने और श्रद्धापूर्वक स्वीकार करने से है। वे जो कुछ लिखते हैं, उसे पढकर; उसके भाव को आत्मसात करने से है।

अरे भाई ! इसके बिना देशनालब्धि संभव नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र के जमाने में ऐसी स्थिति रही होगी, तभी तो उन्हें यह सब लिखना पड़ा, आज की स्थिति तो इससे अधिक विकट है। आज के जमाने में तो लोग जिनवाणी को न सुनने देते हैं, न सुनाने देते हैं; न पढ़ने देते हैं, न पढ़ाने देते हैं, न लिखने देते हैं; न छपाने देते हैं और न अपने घर में रखते हैं और न घर-घर पहुंचाने देते हैं।

वर्णीजी कहा करते थे कि पुरुषों में ७२ कलायें होती हैं; पर बुन्देलखण्ड के लोगों में २ कलायें अधिक होती हैं। एक तो वे कुछ जानते नहीं हैं और दूसरे जाननेवालों की मानते नहीं हैं। पर मेरा कहना यह है कि यह बात अकेले बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं है; अपितु सम्पूर्ण जगत की यही स्थिति है।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव भी तो यही कह रहे हैं कि यह अज्ञानी जगत प्रथम तो जैन तत्त्वज्ञान की मूल बात अर्थात् आत्मा की बात जानता नहीं है और जाननेवालों की उपासना नहीं करता, उनकी सेवा नहीं करता, उसके सत्समागम में नहीं रहता, उनसे लाभ नहीं उठाता; अपितु उनका विरोध करता है; क्योंकि उसे लगता है कि इनके होने से हम प्रतिष्ठित नहीं हो पाते। अरे भाई ! यदि आत्मकल्याण करना है तो आध्यात्मिक शास्त्रों का गंभीर अध्ययन करो, उनका अध्ययन-अध्यापन करनेवालों की संगति में रहो, आध्यात्मिक शास्त्रों के प्रचार-प्रसार में सहयोग करो। आत्मकल्याण के मार्ग में एकमात्र करने-कराने योग्य तो यही सबकुछ है। इसकी उपेक्षा या विरोध करना तो अनंत संसार का कारण है।

हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि हमारे इस प्रतिपादन से उन लोगों को कोई लाभ होनेवाला नहीं है, जो इस मार्ग पर बहुत आगे बढ़ चुके हैं, पर जो लोग इस मार्ग पर चलने के लिए मन बना रहे हैं, उन्हें तो लाभ होगा ही।

यदि उनमें से भी किसी की कषाय कुछ मन्द हो जाय या मंद हो गई हो तो वे लोग भी इसका लाभ उठा सकते हैं; पर बात यह है कि सामाजिक कार्यों से जो कुछ थोड़ी-बहुत प्रतिष्ठा उन्हें प्राप्त हो जाती है, उससे उनकी सबसे बड़ी हानि तो यही होती है कि वर्तमान में जिन लोगों से उन्हें अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ सीखने-समझने को मिल सकता है; वे उनकी बात न तो श्रद्धापूर्वक ध्यान से सुन ही सकते हैं और न पढ़ सकते हैं।

जो भी हो, वस्तुस्थिति का सत्यज्ञान तो समाज को होना ही चाहिए। यह तो सुनिश्चित ही है कि हमारे इस प्रतिपादन से कभी न कभी, किसी न किसी को, कुछ न कुछ लाभ तो होगा ही; क्योंकि यह लोक बहुत बढ़ा है और काल अनन्त है। हमारा तो यह पक्का विश्वास है कि यहाँ नहीं तो और कहीं तथा अभी नहीं तो कभी न कभी, किसी न किसी को इस प्रतिपादन का लाभ अवश्य होगा। यदि किसी को लाभ होना ही नहीं होता तो हमें इस तथ्य को स्पष्ट करने का भाव (विकल्प) भी नहीं आता; क्योंकि सत्य का प्रतिपादन निरर्थक नहीं होता।

पण्डित टोडरमलजी का लाभ उस समय के लोगों ने लिया हो, चाहे न लिया हो; पर आज हम तो उनके प्रतिपादन का भरपूर लाभ उठा ही रहे हैं। इसीप्रकार आज कोई लाभ उठाये चाहे न उठाये, पर भविष्य में तो कोई न कोई लाभ उठायेगा ही।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा द्वारा

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की हीरक जयंती
के अवसर पर सादर समर्पित

भगवान महावीरस्वामी से आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचंद्रदेव आदि वीतरागी दिगम्बर संतों एवं पण्डित बनारसीदासजी, पण्डित टोडरमलजी, दौलतरामजी, आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी आदि विद्वानों द्वारा प्रचारित वीतरागी तत्त्वज्ञान को आत्मसात् कर देश-विदेश में जन-जन तक पहुँचाने वाले एवं **जैन विद्वानों की परम्परा को पुनर्जीवित कर सैंकड़ों विद्वानों के निर्माता** विश्व-प्रसिद्ध विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल को श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा

'विद्वत् निर्माता'

की उपाधि से विभूषित कर अत्यन्त गौरव का अनुभव कर रहा है।

प्रेमचंद जैन बजाज
अध्यक्ष

सोमवार
दिनांक १ मार्च, २०१०

पण्डित रतन चौधरी
निर्देशक